'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Global Impact Factor – 0.565 (2014) & 0.676 (2015) Vol. 2 Issue. 4
ISSN :2348-7143 (Online)
Oct. - Dec.- 2015

कंजर समाज का जीवंत दस्तावेज- रेत

डॉ. स्वाती रमेश नारखेडे
कला विज्ञान एवं पु. ओं. नाहाटा वाणिज्य महाविद्यालय,
भुसावल.

भारत एक विशाल राष्ट्र है, जहॉ अनेक समुदाय निवास करते है। भारत की सामाजिक संस्कृति में आदिवासी समाज का अपना अस्तित्व है। सामान्यत: आदिवासी शब्द से तात्पर्य है - यहॉ के मूल निवासी। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है आदिम युग में रहनेवाली जातियॉ। मूलत: ये वे जातियॉ है जो ५००० वर्ष पुरानी तथा आदिम सभ्यता को संभाले हुए है. कभी आदिवासियों की स्वतंत्र सत्ता थी. उनका जल, जंगल और जमीन के संसाधनों पर अधिकार था। परंतु जैसे-जैसे साम्राज्यवादी शक्तियॉ पनपती गई वैसे-वैसे उनके संसाधनों पर आकमण होने लगा। उनका शोषण होने लगा. इसलिए आज आदिवासी विमर्श अस्तित्व का विमर्श है. इसलिए उनकी भूमिका को ध्यान में रखना होगा क्योंकि भारत में आदिवासियों की संख्या लगभग ९ करोड है। आदिवासी विमर्श आदिवासियों के अस्तित्व एवं अस्मिता को स्वीकार करता हैं इस विमर्श के अंतर्गत आदिवासियों के जीवन के विविध आयामों जैसे आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन का अध्ययन एवं मूल्यांकन किया जाता है। भारतीय संस्कृति की खोज के अनुसार "नागर संस्कृति से दूर रहनेवाले मूल निवासी जो आर्य द्रविड लोगों के पूर्व भारत तथा भारत के बाहर से आकर जंगल, पर्वत में आत्मरक्षा के लिए रहनेवाले ही आदिवासी कहे जाते है "[१] तात्पर्य यह है कि आदिवासी जंगलों, पहाडियों में निवास करते रहे अतएव आदिवासी नागर संस्कृति से अप्रभावित ही रहे है। सरल, सहज स्वभाव इनकी विशेषता है। जल ,जंगल इनकी थाती है। यह अत्यंत त्रासदमय स्थिति है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षो बाद भी आदिवासी उपेक्षित एवं शोषित रहा है। पूँजीपति, भूस्वामी, जमींदार, ठेकेदार और महाजन इन आदिवासियों का शोषण करते है। वनविभाग के कर्मचारी उन पर दहशत फैलाते है। उन्हें डराया धमकाया जाता है। आज स्थिति यह है कि आदिवासियों के साथ आदिवासी स्त्रियाँ भी शोषित हो रही है। यह आदिवासी समाज की मुख्य धारा से कटा हुआ है, हाशिये पर है। डॉ। विनायक तुकाराम के शब्दों में-"प्रत्येक सदी में छला, सताया गया, नंगा किया गया और एक सोची समझी साजिश के तहत वन जंगलों में जब तब भगाया गया एक असंगठित मनुष्य अपनी स्वतंत्र परंपरा से सहस्त्र सालों से गाँव, देहातों से दूर घने जंगलों में रहनेवाला संगहीन मनुष्य। "[२]

इन आदिवासियों को केन्द्र में रखकर उपन्यासों का सजन हुआ है। प्रथम आदिवासी उपन्यास जगन्नाथ चतुर्वेदी का सन१८९९ में प्रकाशित वसंत मालती माना जाता है।जिसमें आदिवासी मल्लाहों का जीवन चित्रित है।इसके पश्चात आदिवासी उपन्यासें की परंपरा प्रारंभ हुई।१९६० से आदिवासी उपन्यास परंपरा लेखन का विकास हुआ है ओर उत्तर शती में यह मुख्य विषय बना है।१९८० के पश्चात जंगल के आसपास, महर ठाकुर का कुआ, शैलूष, धार, पार जंगल जहाँ शुरू होता है, अल्मा कबूतरी, गगन घटा घहरानी, पठार पर कोहरा एवं रेत जैसे सशक्त उपन्यासों का सजन हुआ। जिनमे आदिवासियों के जीवन की स्थिति के विविध आयामों को दश्ष्टि में रखकर चित्रित किया गया है।

भगवानदास मोरवाल का उपन्यास रेत नारी सक्षमीकरण की दष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास सन २००८ में प्रकाशित हुआ। इसमें कंजर को दष्टिकेन्द्र में रखा गया है। कंजर काननचर का अपभ्रंश है इसका अर्थ है जंगल में घूमनेवाला घुमंतू आदिवासी समाज। इसके केन्द्र में गाजूकी गाँव है। जहाँ के कमला सदन में उपन्यास की कथा घटित होती है। कमला सदन लगभग ५०० वर्ग गज जमीन पर बना विशाल मकान है। बाहर प्रवेशद्वार पर

अंग्रेजी के बडे-बडे शब्दों में कमला सदन नाम खुदा हुआ है। वहाँ कमला बुआ का अधिकार चलता है। वह कमला सदन में रहनेवाली सभी स्त्रियों की अभिभावक है। इसी कमला सदन में वेश्या व्यवसाय चलता है। कंजर समाज में जो स्त्रियाँ वेश्या व्यवसाय करती है उन्हें खिलावडी कहते है और जो विवाहित है परंतु वेश्या व्यवसाय नहीं करती उन्हें भाभी कहा जाता है। कथा के केन्द्र में रूक्मिणी है उसीके आसपास कथ्य बुना गया है।आदिवासी समाज में स्त्रियों का वेश्या व्यवसाय अनैतिक नहीं माना जाता। आदिवासियों में कन्या का जन्म आनंददायक माना जाता है क्योंकि भविष्य में वही परिवार की आर्थिक स्थिति संभालती है। रेत उपन्यास में कमला बुआ, सुशिला, माया, वंदना, पिंकी, रूक्मिणी वेश्या व्यवसाय करती है एवं संतो, अनिता गृहस्थी संभालती है। कमलाबुआ सुदंर लडकी की किकमत ज्यादा लेती है क्योंकि उसकी ज्यो लडकी होगी वह भी सुदंर होगी।उपन्यास का नामकरण रेत सार्थक है। रेत का अर्थ है-जिसकी कोई पकड नहीं है। रेत की स्थिति विस्थापन जैसी होती है। रेत को हवा में उडाया जा सकता है। रेत में उत्पन्न कराने की उर्जा नहीं होती। रेत प्रतीक है उस आदिवासी समाज की जो इस उपन्यास के केन्द्र में स्थिति है। उपन्यासकार लिखते हैं-"रूक्मिणी तो ऐसी रेत है जिसे जेसी चाहे हवा उडा ले जाए। जैसा चाहे पानी बहा ले जाए और तो और जिसके जी में आए अपनी मुठ्ठी में कैद कर ले जाए। क्या है इसका अपना, कुछ भी तो नहीं है। भला रेत का भी अपना कोई वजूद होता है।"[३]

अंग्रेज सरकार द्वारा कंजर समाज को अपराधी घोषित किया गया था। ये लोग जंगलों में रहते है, चोरी करना, शिकार करना इनका मुख्य व्यवसाय है। इस समाज की स्त्रियाँ धंदा करती है। इसी कारण आदिवासी समाज पर सदैव पुलिस का आतंक बना रहता है। इस समाज की स्त्रियाँ सबसे अधिक पुलिस द्वारा शोषित होती है। कंजर समाज के लोग चोरी करते है। अत: पकडे जाते है। तब उन्हें जेल से रिहा करने के लिए स्त्रियों को अपना देहिक सौदा करना पडता है। यह स्थिति हितावह नहीं है।

जब रूक्मिणी को सिफलिस की बीमारी हुई तब वैदजी ने उसे कहा कि इस बीमारी का एक ही इलाज है कि वह यह धंदा छोड दे और घर बसा लें। परंतु एक वेश्या के लिए घर बसाना आसान नहीं है और रूक्मिणी को यह धंदा अच्छा लगने लगा है। उसने वैदजी की सलाह पर अपने आपको कुछ दिनों के लिए धंदे से अलग कर लिया परंतु धंदे से अलग होना उचित नही था। आज कमला सदन को कल पूरे गाँव को पता चल जायेगा तब उसका क्या होगा? वास्तव में वेदजी की सलाह रूक्मिणी के सामने ऐसी सूखी रेत बिछा गया है जब-जब वह उसे मुठ्ठी में भरती, तब-तब वह उंगलियों के बीच बने रंध्रों से छनकर वापस जमीन पर आ गिरती। रूक्मिणी वेश्या व्यवसाय करती है परंतु सावित्री मल्होत्रा उसे राजनीति में लाती हे। इसके लिए माध्यम बनते है मुरली भाई। रूक्मिणी को जिला जनजाति महिला प्रकोष्ठ का प्रमुख बनाया जाता है। वह अपने क्षेत्र की सडकों को पक्का बनाती है। सरस्वती जानजाति शिशु मंदीर की स्थापना करती है। इसके पश्चात उसे राज्यस्तर पर काम करने का दायित्व सौपा जाता है। रूक्मिणी कमला सदन के लिए एक पहेली बन गई। कमला बुआ सोचने लगी कि यदि एक खिलावडी इधर-उधर भटकती रहेगी तो कैसे गुजारा होगा। वह राजनीति में सक्षम हो रही है इस रहस्य को उसने लगभग छ: महीने तक छुपाए रखा। परंतु हर काम में सफलता प्राप्त करने के बाद उसे पार्टी के द्वारा एक के बाद एक दायित्व सौंपे जाते है।

वास्तव में उस क्षेत्र में कंजरों के मतों की संख्या लगभग ६०००-६५०० है। अतएव इन मतों को प्राप्त करने के लिए रूक्मिणी का पार्टी में होना आवश्यक माना जाता है। जब विधानसभा में चुनावों की घोशण की जाती है तब धरमपुरा से मुरलीभाई को उम्मीदवार घोषित किया जाता है। परंतु रूक्मिणी इस पद के लिए अपने को सक्षम मानती थी। अत: वह तटस्थ रहना चाहती थी। रूक्मिणी राजनीति में रहकर राजनीति के षडयंत्रों में और राजनीति में की जानेवाली कूटजीति से भलीभाँति परिचित थी। इसलिए उसने पिंकी को मुरली भाई के पास भेजा और उनके अवैध और अश्लील संबंधों के फोटो खिंचवाये जिसे समाचारपत्रों में प्रकाशित करवाया गया। उसका यह षडयंत्र किसीको ज्ञात नहीं था।अतएवं मुरलीभाई को टिकट न देते हुए रूक्मिणी को टिकट दिया गया। यक्मिणी की सूझ-बूझ, कंजर मतदाताओं

की अधिकता ओर उसका व्यक्तित्व तथा चुनाव के लिए जितने हथकंडे होते है सबका उपयोग करती हुई वह चुनाव जीत जाती है। पत्रकारों ने उसके विजय का रहस्य पूछा तो उसने यही कहा कि इस जीत श्रेय सावित्री मल्होत्रा एवं मुरली भाई ही तो है। जब उसने शपथ ली तो तब बुद्धिजीवी व्यथित हुए क्योंकि कंजर चोर, डकैत होते है, जिसकी औरतें धंदा करती है। रूक्मिणी भी धंदा करती थी आर वहीं मंत्री बन रही हे। उपन्यासकार ने यहाँ समसामायिक युग की राजनीति का यथाथ्र वर्णन करते हुए लिखा है कि- हीकैसा समय आ गया है, चोरी चक्कारी करनवाले अबब हमारे रहनुमा बनेंगे। परंतु वर्तमान राजनीति में सबकुछ संभव है। आज स्थिति यह है कि संसद ओर विधानसभा में अनेक अपराधी संसद ओर विधायक बने है। रूक्मिणी की इस सफलता को दृष्टि में रखकर रीता सिन्हा ने लिखा हे कि-"अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सीढी बनाकर भी आज माडर्न और सभ्य समाज की औरतें कुछ नहीं पा सकती, उसे खिलावडी रूक्मिणी पा लेती है। डाव-पेच, छल-प्रपंच के साथ अपनी देह को धरमपुरा विधानसभा सीट चुनाव के लिए हथियार बनाकर जिस चतुराई के साथ वह चुनाव जीतती है ओर उपमंत्री पद की शपथ लेती है वह विस्मयकारी है।"[४] उपन्यास में रूक्मिणी के माध्यम से नारी अस्तित्व और अस्मिता को व्यक्त किया गया है।

आज स्थिति यह है कि प्रत्येक क्षेत्र में नारी अपनी आईडेंटिटी सिध्द कर रहा हे। जो क्षेत्र स्त्रियों के लिए योग्य नहीं माने जाते थे उन क्षेत्रों में स्त्रियाँ अपना सक्षमीकरण सिध्द कर रही है। रक्मिणी की सक्षमता यह है कि वह वेद्यजी से स्पश्ट शब्दों में कहती है कि-"मर्द तो क्या जानवर भी बिना मर्जी से उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देख सकता। यदि वह ऐसा करता है तो खंजर से आँख निकालकर वह उसके हाथ पर रख देगी। आखिर कंजर की भी कोई आबरू है।"[५] यह सुनकर वैद्यजी को पहली बार रूक्मिणी से डर लगने लगा। उसके इस शक्तिरूप को देखकर वे सहम गये और उन्हें लगा कि जैसे सूखी रेत के भरे उँचे-उँचे बीहडो से गिरती जलप्रपात की धवल चादर पर रक्मिणी की असंख्य छबियाँ विभिन्न मुद्राओं में थिरक रही है। रूक्मिणी के माध्यम से उपन्यासकार ने आदिवासी स्त्रियों के अदम्य साहस को प्रस्तुत किया है।

रेत के माध्यम से नारी सक्षीकरण के साथ उनकी सामाजिक व्यवस्था का भी चित्रण हुआ हे।इस समाज मे जाति पंचायत प्रमुख होती है। सभी उसके निर्णय को मानते है। कंजर समाज में विवाह के अवसर पर लडकीवालों को दहेज दिया जाता है। यह रकम भी कम नहीं होती। प्रस्तुत उपन्यास में अंगूरी रंभा के प्रेमी ड्रायवर को बुलाकर स्पष्ट शब्दों में कहती है कि अगर वह अपनी पोती को भाभी बनाता है तो उसे कम से कम दो लाख रूपये दहेज में मिल सकते है ।रंभा जब यह प्रश्न करती है कि उसके प्रेमी की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है । अतः वह इतना धन कहॉ से ला सकता है और मैने अभी तक इतना धन कमाकर दिया है उसका क्या? तब अंगूरी यही कहती है कि रंभा अपना घर बसाकर उसका आर्थिक नुकसान नहीं करना चाहती। रंभा अभी किशोरी है और उसे एक अधेड व्यक्ति को मत्था ढकाई के लिए सौंप दिया जाता है ।इस प्रसंग से बैद्यजी बहुत दुःखी होते है।वे देखते है कि अभी-अभी केशोर्य को लॉघती यह अल्हड गिलहरी और वह हटटा कटटा कुलंग। कमलाबुआ ने यह सौदा सोच-समझकर किया था। क्योंकि यह व्यक्क्ति मत्था ढकाई का सारा खर्चा करनेवाला था। रंभा उसकी मॉ के लिए नोट छापने की मशीन है क्योंकि वह रोज १००० रूपये तो कमाती है। कमला बुआ अपने व्यवसाय को हीन नहीं समझती क्योंकि यह भी एक मेहनत का काम है। उसीके शब्दों में- "जैसे ये इज्जतदार अपनी मेहनत बेचते है न, वैसे ही हम अपनी देह बेचते हैं। हमारे लिए तो हमारी यह देह ही हमारी मेहनत है। हमारे लिए तो यह दूसरे कामों की तरह आम काम है।"[६]इससे यही सिद्ध होता है कि स्त्री ही स्त्री की शत्रू होती है। इसीके साथ आदिवासी स्त्रियों का शोषण सबसे अधिक पुलिस द्वारा किया जाता है। रामसिंह अपने अधिकारी थानेदार केसर सिंह से यही कहता है-मजा तो तब है जब सारी रजिस्ट्रियाँ अर्थात वेश्याओं को थाने बुलाकर एक बार परेड कराई जाए। स्सालियों को पता तो चले कि थानेदार केसर सिंह किस आखिर है किस यमराज का नाम।

प्रस्तुत उपन्यास से यही सिध्द होता है कि आदिवासी कंजरों के जीवन में सुधार लाना हो तो उन्हें जाग्रत, संगठित करना पडेगा। अन्यथा यह समाज मुख्य धारा से पूर्णतया कट जायेगा। जैसे किरण सक्सेना लिखती है-"रेत उपन्यास में अभावग्रस्त पिछडे, असभ्य, अशिक्षित कही जानेवाली ये जनजातियाँ जयराम पेशा जिन्दगी से हटकर जाग्रत और संगठित होने के लिए छटपटा रही है। इनके आंदोलन नक्सलवाद की हिंसा की तरु न बढे इसलिए इन्हें सभ्य समाज, सरकार, प्रशासक, समाजसेवी सभी के सामूहिक प्रयास से मुख्यधारा में लाना होगा। यही आज की माँग है"[७]

समग्रत: भगवानदास मोरवाल का रेत उपन्यास आदिवासी जनजीवन विशेषकर आदिवासी स्त्रियों की दुखद स्थिति का जीवंत दस्तावेज है। इन स्त्रियों की नियति यही है कि इन्हें विवश होकर देह व्यापार करना पडता है। रूक्मिणी का संपर्क मुरली भाई से होता है और वह सावित्री मल्होत्रा की प्रेरणा से राजनीति में प्रवेश करती है तथा राजनीति में सर्वोच्च मंत्रीपद तक पहुँचती है। इससे स्पष्ट होता है कि यदि स्त्री दढ प्रतिज्ञा करें, अपनी महत्वाकांक्षाओं को अंजाम देने का साहस करें, तो वह स्त्रियों के लिए वंचित और उपेक्षित रहे राजनीति जसे क्षेत्रों की उँचाईयों तक पहुँच सकती है।

संदर्भ संकेत-

१. भारतीय संस्कृति की खोज- सं. महादेव शास्त्री, खंड-१, पृ. ४२८
२. हाशिये की बेचारगी- सं. महेश चौधरी, पृ. २५०
३. रेत- भगवानदारल मोरवाल, पृ. १११
४. समीक्षा- सं. गोपालराय, अप्रैल-जून, पृ. १५
५. रेत- भगवानदास मोरवाल, पृ. ११२
६. रेत- भगवानदास मोरवाल, पृ. १४४
७. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श- डॉ.शिवाजी देवरे, डॉ. मधु खराटे, पृ. १००